P-312

Total Pages : 3 Roll No. .....

MASL-604

नाटक एवं नाटिका भाग-01

MA Sanskrit (MASL)

3rd Semester Examination, 2023 (June)

Time : 2 Hours] **Max. Marks : 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।

(खण्ड-क)

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×19=38)

1. नाट्य शब्द का अर्थ बताते हुए नाट्य साहित्य का उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए।

2. मृच्छकटिकम् के नायक चारुदत्त के चरित्र का वर्णन कीजिए।

3. मृच्छकटिकम् के प्रथम और द्वितीय अंक का सारांश विस्तारपूर्वक अपने शब्दों में लिखिए।

4. दरिद्र व्यक्ति के जीवन का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

5. निम्नलिखित श्लोक की सन्दर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

कामं नीचमिदं वदन्तु पुरुषाः स्वप्ने च यद्वर्धते
विश्वस्तेशु च वंचना परिभवच्शौर्य न शौर्यं हि तत्।
स्वाधीना वचनीयतापि हि वरं बद्धो न सेवान्जलि-
र्मार्गो ह्येष नरेन्द्र सौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रौणिना।।

(खण्ड-ख)

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×8=32)

1. मृच्छकटिकम् में वर्णित सामाजिक कुरीतियों पर लेख लिखिए।

2. मृच्छकटिकम् के लेखक शूद्रक की काव्यकला पर प्रकाश डालिए।

3. विदूषक का बताते हुए उनके गुणों का वर्णन कीजिए।

4. निम्नलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए :

सत्यं न मे विभवनाश कृतास्ति चिन्ताः,
भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।
एतत्तु मां दहति नष्टधनाश्रयस्य,
यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति।।

5. मृच्छकटिकम् की भयभीत नायिका वसन्तसेना का वर्णन कीजिए।

6. शकार का चरित्र-चित्रण लिखिए।

7. मृच्छकटिकम् तृतीय अंक का सार अपने शब्दों में लिखिए।

8. निम्नलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए :

अन्यासु भित्तिषुमया निशि पाटितासु,
क्षारक्षतासु विषमासु च कल्पनासु।
दृष्टवां प्रभातसमये प्रतिवेशिवर्गो,
दोषांश्च मे वदति कर्मणि कौशलं च।।